International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

बाबू बालमुकुंद गुप्त की पत्रकारिता और हिन्दी भाषाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Permila

Research Schloar, Deptt of Hindi, NIILM University

Email : rakeshmadhur79@gmail.com

शोध आलेख सारः

''वस्तुतः बालमुकुन्द गुप्त हिन्दी पत्रकारिता के ऐसे कीर्तिस्तम्भ हैं जिन पर हरियाणावासियों के साथ–साथ सम्पूर्ण भारतवासी गर्व महसूस करते हैं। उनकी पत्रकारिता में राष्ट्रीय जागरण व सामाजिक चेतना का जो स्वर दिखाई देता है, वह अन्यत्र दुलर्भ है। उनकी पत्रकारिता में राष्ट्रवाद , हिन्दुत्व, उदारता, निडरता, स्पष्टता, सरलता, सहजता, व समता के रूप में जो विशेषताऐं विद्यमान हैं, उनका प्रभाव प्रत्येक भारतीय पत्रकार व साहित्यकार के दिल और दिमाग पर पड़ा है। वास्तव में गुप्त जी उच्च कोटि के ऐसे साहित्यकार थे , जिन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त शोषण को अपनी रचनाओं में उजागर किया है। उनका 'भारत मित्र' नामक समाचार पत्र के संपादक के रूप में जो सफर प्रारम्भ हुआ, वह आगे चलकर उनकी राष्ट्रभावना का प्रतीक बन गया और उन्होंने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से हिन्दी साहित्य की अपार सेवा की। अन्ततः प्रस्तुत शोध पत्र उनकी पत्रकारिता के हिन्दी भाषा पर पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन प्रस्तुत करता है।''

मूल शब्द : राष्ट्रीय जागरण, हिन्दी पत्रकारिता, सामाजिक चेतना, हिन्दी प्रेम, राष्ट्रीय भावना।

भूमिकाः

गुप्त जी हिन्दी पत्रकारिता के प्रतिनिधि पत्रकार व साहित्यकार हैं जो तत्कालीन समाज में व्याप्त शोषण व अंग्रेजी साम्राज्य के दमनकारी स्वरूप को अपनी लेखनी के माध्यम से उकेरते हैं। यद्यपि गुप्त जी का संबध हरियाणा से है, परन्तु वे समस्त भारतवर्ष के लिए गर्व की बात है कि उन्होंने अपनी लेखनी को आधार बनाकर हिन्दी साहित्य की अपार सेवा की और हिन्दी को परिष्कृत करने का बीड़ा उठाया। उनकी भाषा इतनी सहज व सरल है कि एक आम व साधारण व्यक्तित्व वाला भारतीय भी उसे समझ सकता है कि गुप्त जी ने उर्दू से हिन्दी तक का सफर बडी आसानी से पूरा किया। उन्होंने '**अखबारे चुनार**' तथा '**कोहेनूर**' के संपादक के रूप में कार्य करते हुए हिन्दी पत्रकारिता के नए युग की शुरूआत की। जब उन्होंने अपनी लेखनी ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध उठाई तो तत्कालीन पत्रकारिता के क्षेत्र में एक आन्दोलन पैदा हो गया जो आगे चलकर गुप्त जी के हिन्दी प्रेम के रूप में व्यक्त हुआ और वे राष्ट्रवादी पत्रकारों व साहित्यकारों की श्रेणी में गिने जाने लगे। वस्तुतः उनकी ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध पत्रकारिता हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना मानी जा सकती है। वास्तव में उनके राष्ट्रप्रेम की जो झलक '**भारत मित्र**' में मिलती है, वह उनकी सम्पूर्ण जीवन यात्रा के दौरान जारी रही और उन्होंने ब्रिटिश अन्याय व शोषण का डटकर मुकाबला किया तथा अनेक ऐसे लेख लिखे जिससे भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना पैदा हुई।

प्रारम्भ में गुप्त जी ने अपनी रचनाऐं उर्दू में लिखी। परन्तु वे इस बात को शीघ्र ही समझ गए कि हिन्दी आम जनमानस की भाषा है। यदि हिन्दी में लिखा जाए तो आम व्यक्ति को भी इसका लाभ मिलेगा। इसी के दृष्टिगत उन्होंने '**उर्दू का उत्तर**' शीर्षक के साथ–साथ '**नागरी अक्षर**', '**मुस्लमानी नागरी**' '**उल्टे अक्षर**', '**उर्दू की मौत**', '**उल्टी दलील**', '**पंजाबी –उर्दू**', '**नागरी की अर्जी**', '**गरारेदार पंडित**', '**मौलवी का ऊँट**', '**नागरी और उर्दू**', '**कुल्हिया में गुड़**', '**हिन्दी उर्दू का मेल**', व '**नागरी का फैसला**' आदि अनेक लेख लिखे। इन लेखों के माध्यम से गुप्त जी ने स्पष्ट किया कि उर्दू भाषा हिन्दी से अलग नहीं है, बल्कि दोनों एक दूसरे से काफी मिलती हैं। इस प्रकार गुप्त जी ने उन आलोचकों का मुंह बंद कर दिया जो इन दोनों को अलग मानकर हिन्दू–मुस्लिम एकता को तोड़ने के लिए कार्य कर रहे थे। इसके साथ–साथ गुप्त जी को समस्त साहित्यिक मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए अपना साहित्यक दायित्व पूरा किया और उन साहित्यकारों को जागृत करने का प्रयास किया जो समर्थ होते हुए भी सो चुके थे।

अधिकांश साहित्यकार इस बात को भी स्वीकारते हैं कि 20वीं सदी के अंत तक गुप्त जी की हिन्दी भाषा पर पकड़ काफी मजबूत हो चुकी थी। उनकी रचनाओं को पाने के लिए पत्र–पत्रिकाऐं भी उतावली रहती थी और पाठकों की बात तो क्या की जाए, वे भी उन्हें पढने को आतुर रहते थे। उनकी रचनाओं मे पश्चिमी सभ्यता का विरोध और स्वदेश

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

प्रेम की भावना झलकती थी और उनकी आलोचना भी गुप्त जी ने की जो आंख बंद करके विदेशी शासको की जी हुजूरी करते थे। वास्तव में गुप्त जी साहित्य जगत की मर्यादाओं को ध्यान में रखकर लिखते थे और अपनी रचनाओं के प्रकाशन को मर्यादा में रखकर लिखते थे और अपनी रचनाओं के प्रकाशन को मर्यादा में रहकर अमली जामा पहनाते थे। 1903 में जब लार्ड कर्जन भारत में आए तो गुप्त जी ने राष्ट्रहित में कर्जन पर निशाना साधा और बंग–भंग पर तो जो कुछ गुप्त जी ने लिखा, उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने लिखा है कि कर्जन के शासनकाल में जो कार्य हुए है, उनका जनता से कोई सरकार नहीं है। कर्जन को भारतीयों की वास्तविक स्थिति का कोई ज्ञान नहीं है कि वे कैसा नरकीय जीवन जी रहे हैं।[1]

यही कारण है कि गुप्त जी अपनी अन्य रचनाओं में भी हिन्दी के साथ–साथ उर्दू की शब्दावली का भी खुलकर प्रयोग किया। ये रचनाऐं – '**रत्नावली वाटिका**', '**हिरदास हिन्दीनाम**', '**स्फुट कविता**', '**बालमुकुंद गुप्त निबंन्धावली**', '**खिलौना**', '**खेल–तमाशा**' है।[2] स्फुट कविता में उनकी कविताऐं संकलित हैं। इसके अलावा उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा का **बनारस अखबार, सुधारक, कवि वचन सुधा, अलमोड़ा अखबार, हिन्दी दीप्त प्रकाश, बिहार बन्धु, सपादर्श, काशी पत्रिका, सारससुधानिधि, उचित वक्ता, भारत मित्र, दैनिक पत्र** हिन्दी स्थान आदि पत्रों महत्वपूर्ण ढंग से वर्णन किया।[3] उन्होंने अपने सारे लेखों में यह बात स्पष्ट कर दी कि अंग्रेजी सरकार किसी भी रूप में भारतीयों के लिए हितकारी नहीं है। इस बात का प्रमाण '**भारत मित्र**' में छपे लेख '**दिल्ली से कलकत्ता**' में भी मिलता है। यहॉ यह कहना गलत नहीं है कि उन्होंने अपना सारा जीवन राष्ट्र व हिन्दी भाषा के विकास के लिए न्यौछावर कर दिया।

अधिकांश विद्वान और साहित्यिक समीक्षक यह मानते हैं कि उनका हिन्दी भाषा से असीम प्रेम था। इसीलिए उन्होंने उर्दू की कमियों को उजागर करके हिन्दी भाषा को अपनी पत्रकारिता का आधार बनाया और हिन्दी को परिष्कृत करने के लिए एक साहित्यिक आन्दोलन चलाया। उनके हिन्दी प्रेम को उजागर करते हुए क्षेमचन्द्र सुमन ने लिखा है – ''यह एक सौभाग्य की ही बात समझी जाएगी कि मूलतः उर्दू के पत्रकार और लेखक होने के बावजूद भी गुप्त जी ने '**भारत मित्र**' तथा '**हिन्दुस्थान**' के अपने हिन्दी पत्रकारिता के कार्यकाल में हिन्दी की हिमायत जैसी दृढता से की, वह उनकी हिन्दी भाषा के प्रति असीम प्रेम तथा श्रद्धा का परिचायक है।''[4] इसी प्रकार आर0 सी0 त्रिपाठी लिखते हैं– ''प्रारम्भ में उर्दू की पत्रकारिता करने वाले गुप्त जी ने हिन्दी का अध्ययन मिड़ल तक प्राप्त किया। उन्होंने स्वीकार किया है कि वे चाहकर भी आगे न पढ सके। परन्तु हिन्दी के प्रति वे आजीवन समर्पित रहे। वस्तुतः हिन्दी के सजग व सक्रिय प्रथम पत्रकार के रूप में उन्होंने हिन्दी की प्राण प्रतिष्ठा स्थापित की जो भारतीयों व हिन्दी भाषा के लिए गर्व की बात है।''[5]

गुप्त जी के बारे में यह निर्णय करना भी कठिन होता है कि वे गद्यकार थे या कोई कवि थे। उनके गद्य लेखन की विशेषता यह थी वे छोटे–छोटे वाक्यों का प्रयोग करते थे और लोक प्रचलित बातों व मुहावरों का प्रयोग करके भाषा शैली की शोभा बढाते थे। यही नहीं चुटकलों के प्रयोग से उन्होंने हिन्दी भाषा को रूचिकर बनाया। इसी कारण वे हिन्दी के श्रेष्ठ गद्यकार माने जाते हैं। वे हिन्दी के प्रेमी होने के बावजूद भी अन्य भाषाओं के विरोधी नहीं थे। बालमुकुन्द गुप्त निबन्धावली में संकलित लेख '**राष्ट्रभाषा और लिपि**' के तहत हिन्दी भाषा की भूमिका शीर्षक में गुप्त जी ने लिखा है – ''वर्तमान हिन्दी भाषा की जन्मभूमि दिल्ली है। वहीं ब्रजभाषा से वह उत्पन्न हुई और वहीं उसका नाम रेखता पड़ा। बहुत दिनों बाद उसका नाम उर्दू हुआ। अब फारसी देशों में उर्दू ज्यों का त्यों बना हुआ रखकर देवनागरी शास्त्रों में हिन्दी भाषा कहलाती है।''[6]

हिन्दी भाषा के विकास के लिए गुप्त जी ने भारतेन्दु हरिशचन्द्र द्वारा स्थापित पद्धति को आगे बढाने का कार्य किया। उन्होंने हिन्दी के अवैज्ञानिक शब्दों को संशोधित करके सही शब्दों के उपयोग पर बल दिया। जब गुप्त जी ने '**भारत मित्र**' में लेख लिखने शुरू किए तो उनकी गणना विविख्यात विद्वानों व साहित्यकारों में होती थी। गुप्त जी ने अपनी पत्रकारिता की भाषा में भी लोक प्रचलित मुहावरों, ग्रामीण परिवेश के चुटकलों, कहावतों, छोटे व सरल वाक्यों का प्रयोग किया। यदि किसी को उनके द्वारा प्रयोग किए गए शब्द पर कोई ऐतराज होता था तो वे तर्क द्वारा उसे समझाने का प्रयास करते थे। इसके साथ–साथ गुप्त जी अच्छी आलोचना के भी पक्षधर थे। उनका मानना था कि समालोचना करते समय कभी नहीं भूलना चाहिए कि दूसरे जब उसकी आलोचना करें तो उनमें उसे भी सहन करने की शक्ति होनी चाहिए। यद्यपि हिन्दी में आलोचना का अर्थ है – भिंड के छत्ते को छेड़ देना। छेडने वालों को चाहिए कि वे बहुत सी भिंड़ों के दंश सहने को तैयार रहें।[7] वस्तुतः गुप्त जी ने साहित्यिक विवादों को हिन्दी के लिए मंगलकारी माना है।

हिन्दी भाषा के प्रति गुप्त जी के असीम प्रेम को देखते हुए जगदीश प्रसाद चर्तुवेदी ने लिखा है – ''गुप्त जी के भाषा के बारे में अपने ही विचार थे। उनकी पृष्ठभूमि उर्दू पत्रकारिता थी। परन्तु इससे उनका हिन्दी गद्य कमजोर नहीं हुआ बल्कि शक्तिशाली हुआ। वे भाषा को एक बहता नीर मानते थे और वह हिन्दी की परम्परा के सर्वथा अनुकूल था।''[8] उन्होनें आगे लिखा है – ''गुप्त जी ने लेखन कार्य को उदार बनाया और साहित्यकारों की कीर्ति की रक्षा की परम्परा शुरू की। यदि गुप्ता जी ने अपने समय की पत्रकारिता का इतिहास न लिखा होता तो हिन्दी पत्रकारिता का मूल्यांकन करना कठिन हो जाता।''[9]

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सारांशः

अन्त में बाबू बालमुकुंद गुप्त की पत्रकारिता का विवेचन करने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गुप्त जी युग प्रवर्तक पत्रकार थे। जिन्होंने अपनी लेखनी को आधार बनाकर तत्कालीन समय में ब्रिटिश अन्याय के विरूद्ध आवाज आई और उर्दू से हिन्दी की तरफ बढकर हिन्दी भाषा के परिष्कार का बीड़ा उठाया। उन्होंने अपनी पत्रकारिता के आधार पर हिन्दी में एक ऐसी शैली विकसित की जो आज भी प्रासांगिक है। उन्होंने हिन्दी को आम जनमानस की भाषा बनाने के लिए सहज व सरल शब्दावली का प्रयोग किया और एक साहित्यिक आन्दोलन की नींव रखी। इससे हिन्दी भाषा को काफी लाभ हुआ और हिन्दी को देश प्रेम की डोर के रूप में देखा जाने लगा। वास्तव में गुप्त जी ने राष्ट्रीय जागृति लाने के लिए स्वभाषा के प्रयोग पर बल दिया और स्वयं यह बात स्वीकार की कि राष्ट्र और राष्ट्रभाषा मेरे लिए सर्वोपरि हैं। इस प्रकार हिन्दी पत्रकारिता को माध्यम बनाकर हिन्दी भाषा के परिष्कार के लिए जो आन्दोलन गुप्त जी ने शुरू किया था, वह आगे चलकर जनजागृति का माध्यम बन गया और इससे भारतीय सभ्यता व संस्कृति के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। अतः गुप्त जी की हिन्दी साहित्य व पत्रकारिता के क्षेत्र में देन शाश्वत महत्व की है।

सन्दर्भ सूचीः

1. झाबरमल शर्मा व बनारसीदास चतुर्वेदी, (सम्पादित), **बालमुकुंद गुप्त निबन्धावली,** गुप्त स्मारक ग्रन्थ प्रकाशन समिति, कलकता, सम्वत 2007, पृष्ठ–208
2. अमरेन्द्र कुमार, (संपादित), **युगप्रवर्तक पत्रकार और पत्रकारिता**, अक्षरांकन प्रकाशन, नोएडा (उत्तरप्रदेश), 2003, पृष्ठ–25
3. नवीन चन्द्र पंत, **पत्रकारिता के स्वरूप एवं प्रमुख पत्रकार,** कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ– 237
4. क्षेमचन्द्र सुमन**, हिन्दी के यशस्वी पत्रकार,** प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्राालय, नई दिल्ली, 1986, पृष्ठ 82–83
5. आर0सी0 त्रिपाठी, **हिन्दी पत्रकारिता के सिद्धांत,** पल्लव प्रकाशन, दिल्ली, 1993, पृष्ठ– 268
6. **बालमुकुन्द गुप्त निबंधावली,** पृष्ठ –105
7. **उपरोक्त,** पृष्ठ–427
8. जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, **हिन्दी पत्रकारिता के कीर्तिमान,** साहित्य संगम प्रकाशन, इलाहबाद, 1993, पृष्ठ–110
9. **उपरोक्त,** पृष्ठ–113